अक्षरों का महत्त्व

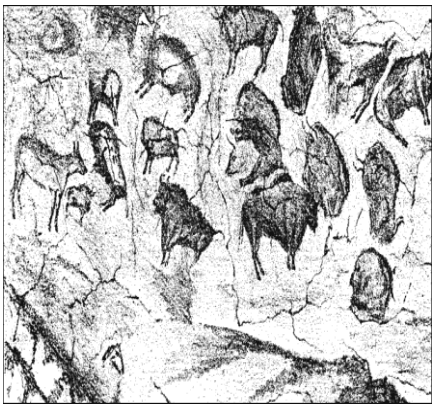
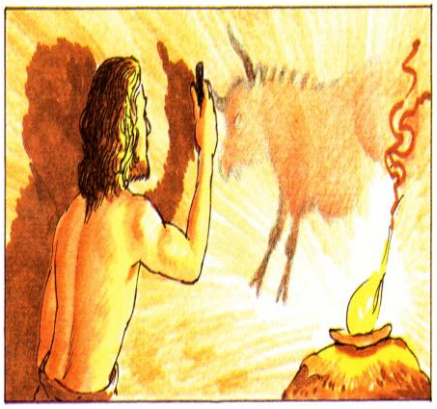

सारी पुस्तकें अक्षरों से बनी हैं। तरह–तरह की पुस्तकें। तरह–तरह के अक्षर।

पुराने ज़माने के लोग सोचते थे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की है। पर आज हम जानते हैं कि अक्षरों की खोज किसी ईश्वर ने नहीं, बल्कि स्वयं आदमी ने की।

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव व्यक्त किए। जैसे– पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र। इन चित्र–संकेतों के बाद में भाव–संकेत अस्तित्व में आए। जैसे "सूर्य" का चित्र "ताप" या "धूप" का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव–संकेत अस्तित्व में आए।

तब जाकर काफ़ी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की। अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं।

आदमी ने जबसे लिखना शुरू किया तबसे "इतिहास" आरंभ हुआ। उसके पहले के काल को "प्रागैतिहासिक काल" यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं।

अतः हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज नहीं करता तो आज हम इतिहास को न जान पाते। हम यह न जान पाते कि पिछले कुछ हज़ार सालों में आदमी किस प्रकार रहता था, क्या–क्या सोचता था, कौन–कौन राजा हुए इत्यादि।

अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा। इस प्रकार, एक पीढ़ी के ज्ञान का इस्तेमाल दूसरी पीढ़ी करने लगी।

यह महत्त्व है अक्षरों का और उनसे बनी हुई लिपियों का ।

अभ्यास कार्य

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद की मदद से लिखिए–

प्र.1 पुस्तकें किससे बनी होती हैं ?

.....

प्र. 2 प्रागैतिहासिक मानवअपने भाव कैसे व्यक्त करता था ?

.....

प्र. 3 अक्षरों की खोज कब हुई ?

.....

प्र. 4 "प्रागैतिहासिक काल"किसे कहते हैं ?

.....

प्र. 5 अक्षरों की खोज किसने की ?

.....

प्र. 6 पुराने ज़माने के लोग क्या सोचते थे ?

.....

.....

प्र. 7 "सूर्य" का चित्र किसका द्योतक था ?

.....

प्र.8शब्द शुद्ध करके लिखो ?

प्रागतिहासिक :– .....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग